E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

वेणीसंहार

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

भट्टनारायणकृत वेणीसंहार नामक नाटक में 6 अंक हैं। इसमें भीम के द्वारा द्रौपदी के वेणीसंहार (वेणी को सँवारने या बाँधने) का वर्णन है, अतः नाटक का नाम वेणीसंहार पड़ा। इसमें द्रौपदी के अपमान का बदला लेने के लिए भीम प्रतिज्ञा करता है कि वह दुःशासन की छाती का खून पीएगा और दुर्योधन की जाँघ तोड़ेगा। दोनों प्रतिज्ञाएँ पूरी होने पर वह द्रौपदी की वेणी बाँधता है।

अंकानुसार कथा इस प्रकार है- (अंक १) भीमसेन की प्रतिज्ञा कि दुःशासन की छाती का खून पीऊँगा और दुर्योधन की जाँघ तोड़कर रक्तरंजित हाथ से द्रौपदी के बाल बाँधूंगा। कृष्ण सन्धि के प्रयत्न में असफल होकर लौटते हैं। दुर्योधन ने कृष्ण को बन्दी बनाने का प्रयत्न किया था, परन्तु विश्वरूप-दर्शन से वे उसके चंगुल से बच सके। (अंक २) अभिमन्यु की हत्या; दुर्योधन की पत्नी भानुमती का स्वप्न-वृत्तान्त सुनाना; स्वप्न में नकुल द्वारा सौ सर्पों का वध और भानुमती का नकुल (न्यौले) पर आकृष्ट होना; नकुल (पाण्डव) पर भानुमती का आकृष्ट होना समझ कर दुर्योधन का भानुमती के वधार्थ उद्यत होना; स्वप्न जानकर शान्ति; भानुमती के साथ दुर्योधन की काम-क्रीडा का वर्णन; दुर्योधन को अत्यन्त कामुक चित्रित किया जाना; अर्जुन की जयद्रथ वध की प्रतिज्ञा। (अंक ३) कर्ण द्वारा भीम के पुत्र घटोत्कच का वध; धृष्टद्युम्न के द्वारा द्रोण का वध; कृपाचार्य का अश्वत्थामा को सेनापित बनाने का प्रस्ताव; दुर्योधन का कर्ण को सेनापति बनाना; कर्ण और अश्वत्थामा का वाग्युद्ध; अश्वत्थामा का शस्त्र-त्याग; भीम द्वारा दुःशासन की छाती का खून पीने की सूचना। (अंक ४) दुःशासन की रक्षा करते समय दुर्योधन का घायल होना; अर्जुन के द्वारा कर्ण के पुत्र वृषसेन का वध; कर्ण का दुःखित होना। (अंक ५) अर्जुन द्वारा कर्ण का वध; दुर्योधन का युद्धार्थ उद्यत होना; धृतराष्ट्र के अभिवादनार्थ भीम और अर्जुन का आगमन; वहीं पर भीम और दुर्योधन का वाग्युद्ध; अश्वत्थामा का

आगमन, दुर्योधन के व्यवहार से असन्तुष्ट एवं रुष्ट अश्वत्थामा का प्रस्थान (अंक ६) शल्य की मृत्यु; भीम के द्वारा वध से बचने के लिए दुर्योधन का सरोवर में छिपना; सहदेव के प्रयत्न से दुर्योधन का पता लगना, भीम और दुर्योधन का गदा-युद्ध; दुर्योधन के मित्र चार्वाक नामक राक्षस का युधिष्ठिर को धोखा देना और बताना कि गदायुद्ध में भीम की मृत्यु और अर्जुन से गदायुद्ध चालू है; युधिष्ठिर और द्रौपदी का चिता में जलने के लिए तैयार होना; दुर्योधन को मार कर भीम का आगमन और द्रौपदी का वेणी -बन्धन।

मूलकथा में परिवर्तन- वेणीसंहार की मूलकथा महाभारत से ली गई है। कवि ने आवश्यकतानुसार तथा घटनाओं को नाटकीय रूप देने के लिए अनेक संशोधन, परिवर्तन और परिवर्धन किए हैं। अतएव यह नाटक नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से महत्वपूर्ण बन सका है। मुख्य परिवर्तन हैं-

(१) दुर्योधन के रक्त से रंजित हाथों से द्रौपदी की खुली वेणी को बाँधने की भीम की प्रतिज्ञा। मूलकथा में केवल ऊरुभंग की प्रतिज्ञा है।

(२) युधिष्ठिर पाँच गाँव लेकर सन्धि का प्रस्ताव श्रीकृष्ण के द्वारा भिजवाते हैं। मूलकथा में पाँच गाँव देकर सन्धि करने का प्रस्ताव संजय ने दुर्योधन से किया है।

(३) वेणीसंहार में दुर्योधन के चंगुल से बचने के लिए श्रीकृष्ण विश्वरूप दिखाते हैं। मूलकथा में प्रभावातिशय-प्रदर्शनार्थ विश्वरूप-दर्शन है।

(४) प्रथम अंक में भानुमती और द्रौपदी के वार्तालाप का प्रसंग कवि को मौलिक कल्पना है।

(५) द्वितीय अंक की कथा सर्वथा मौलिक है। महाभारत में भानुमती का नाम भी नहीं है।

(६) तृतीय अंक में कर्ण और अश्वत्थामा का वाग्युद्ध द्रोण के निधन के बाद होता है। महाभारत में द्रोण-वध के पूर्व यह वाग्युद्ध वर्णित है। वहाँ इसका प्रारम्भ कर्ण-कृपाचार्य के वाग्युद्ध से होता है।

(७) तृतीय अंक का प्रवेशक कवि की मौलिक कल्पना है। इसमें राक्षस और राक्षसी के संलाप में युद्ध की कई घटनाओं की संक्षिप्त सूचना दी गई है।

(८) षष्ठ अंक में भीम के ललकारने पर दुर्योधन जलाशय से निकलता है। महाभारत में युधिष्ठिर ललकारते हैं।

(e) षष्ठ अंक में चार्वाक राक्षस का आगमन और युधिष्ठिर को धोखा देना, दुर्योधन का कूटनीतिक प्रयोग है। इसका विशेष नाटकीय महत्व है। महाभारत में युद्ध की समाप्ति के बाद युधिष्ठिर की निन्दा के लिए ब्राह्मण रूप में राक्षस हस्तिनापुर जाता है।

(१०) षष्ठ अंक में राक्षस द्वारा भीम की मृत्यु का झूठा समाचार सुनकर युधिष्ठिर और द्रौपदी के चितारोहण की तैयारी और करुण रस का प्रसङ्ग महाभारत में सर्वथा नहीं है।

भारतीय नाटककारों में नाटककार के रूप में भट्टनारायण का अपूर्व स्थान है। भट्टनारायण ही वे नाटककार हैं, जिन्होंने नाट्यशास्त्र की नियमावली का विधिवत् पालन किया है, अतएव नाट्य-शास्त्राचार्यों ने भट्टनारायण को बहुत महत्त्व दिया है और पद-पद पर वेणीसंहार के उद्धरण दिए हैं। नाट्यशास्त्रीय नियमों को ध्यान में रखते हुए नाटक में उनका जितना सफलतापूर्वक प्रयोग किया गया है, उतना अन्यत्र दुर्लभ है। प्रकृतियाँ, अवस्थाओं और सन्धियों का अत्यन्त सुन्दर प्रयोग हुआ है। कथानक सुन्दर और रोचक है। महाभारत की मूलकथा को कवि ने आवश्यक परिवर्तन करके नाटकोपयोगी बनाया है। कथा-संयोजन में सौष्ठव कवि की प्रतिभा पर निर्भर है। संवाद रोचक हैं, किन्तु कुछ स्थलों पर आवश्यकता से अधिक लम्बे होने के कारण नीरस हो गए हैं। द्वितीय अंक में प्रकृति-वर्णन के कुछ सुन्दर प्रसंग हैं। कथानक यद्यपि रोचक है, तथापि घटनाचक्र बहुत सीमित है, अतः नाटक के लिए उपयुक्त गति या प्रवाह का अभाव है। भट्टनारायण ने नाटकीय नियमों की पूर्ति के लिए वीर रस के नाटक में भी शृङ्गाररस की उद्भावना की है। युद्ध-काल में दुर्योधन भानुमती की कामक्रीडा भले ही शृङ्गार रस का सुयोग प्रदान करे, किन्तु इससे रस-भंग दोष उत्पन्न होता है। पात्रों का चरित्र चित्रण सुन्दर हुआ है। भीम आदर्श वीर के रूप में प्रस्तुत है। वह प्रण रक्षा के लिए प्राण गँवाने को तैयार रहता है। उसके चरित्र में कहीं कोई शिथिलता या न्यूनता नहीं है। युधिष्ठिर बहुत सीधे भले आदमी हैं। जो जैसा कहता है, वे वैसा ही मानने को तैयार हो जाते हैं। दुर्योधन कूटनीति और राजनीति का चतुर खिलाड़ी है। वह पराजय पर पराजय होने पर भी हिम्मत नहीं हारता। मित्रों का आदर करता है। उनकी निन्दा नहीं सुन सकता। विलासिता उसके जीवन की कमजोरी है। अश्वत्थामा वीर योद्धा है, किन्तु उसे अवसर का विवेक नहीं है। बार-बार हथियार छोड़ना और उठाना, उसकी बुद्धि

की अस्थिरता का सूचक है। कर्ण शूर, वीर, महारथी है। वह स्वाभिमानी है। उसमें नाममात्र की भी हीनता की भावना नहीं है। वह मित्र के लिए सर्वस्व अर्पण करता है।

कवि घटना-संयोजन में अत्यन्त दक्ष है। उसने सभी अनावश्यक प्रसंगों को काट दिया है। प्रारम्भ से अन्त तक सभी अंक संबद्ध हैं। प्रत्येक वर्णन सार्थक है। वर्णनों में स्वाभाविकता है। प्रभात-वर्णन (अंक २), युद्ध-वर्णन (अंक ३ और ४), युधिष्ठिर और द्रौपदी का जलने के लिए उद्यत होना (अंक ६), ये वर्णन स्वाभाविक, मनोहर और नाट्यकला के सुन्दर निदर्शन हैं। वर्णनों और घटनाओं में संकेतात्मकता है। प्रत्येक पात्र अपनी स्थिति के अनुकूल भाषा का प्रयोग करते हैं। युधिष्ठिर, भीम, अश्वत्थामा और कर्ण की उक्तियों से उनके चरित्र का खाका खींचा जा सकता है। भीम के कथनों में धीरोद्धत नायक के सभी गुण प्राप्य हैं। उसकी भाषा में अक्खड़पन है।

इस नाटक में वीर अंगी रस है। शृङ्गार, रौद्र, करुण, बीभत्स आदि अंग रस है। नाटक का प्रारम्भ और अन्त वीर रस से है। वीर रस नाटक की अन्तरात्मा में व्याप्त है। भीम, दुर्योधन, अश्वत्थामा और कर्ण को वीर रस की सामग्री प्रदान करने का श्रेय है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि वेणीसंहार नाट्यकला का उत्कृष्ट उदाहरण है।

भट्टनारायण की शैली और काव्य-सौन्दर्य- भट्टनारायण मुख्यतः गौडी रीति के कवि हैं। वेणीसंहार में वीररस मुख्य है, अतः इसमें ओज गुण और गौडी शैली का प्राधान्य है। भीम आदि के कथनों में समास-बहुलता, क्लिष्टता और दुरूहता है। अनेक प्रसंगों में वैदर्भी और पांचाली का भी प्रयोग मिलता है, परन्तु ऐसे प्रयोग शृङ्गार, करुण, संवाद और उपदेशात्मक नीति-श्लोकों में मिलते हैं। पात्रों के अनुरूप भाषा का प्रयोग है। संवादों में संक्षेप और चुस्ती है। कुछ स्थलों पर युद्ध-वर्णन अवश्य लम्बे हो गए हैं और नाटक की गति में व्यवधान उपस्थित करते हैं। कवि की भाषा अत्यन्त सबल, प्रौढ और पुष्ट है। उसकी भाषा में शक्ति है। वह निर्जीव को भी सजीव प्रौर निराश को धीर-वीर बना दे। वीर शृङ्गार और करुण के प्रसंगों में कवि का कवि-हृदय जागृत हो जाता है और वह भाव-प्रवाह में बह जाता है। कवित्व का आकर्षण उसे इतना भावुक बना देता है कि वह भूल जाता है कि नाटक लिख रहा है या काव्य। इस नाटक में ओज के साथ प्रसाद और माधुर्य भी पर्याप्त मात्रा में है। भाषा

परिष्कृत और प्रांजल है। भावों की उदात्तता है। प्रायः सभी मुख्य रस प्राप्य हैं। अलंकारों के लिए अलंकारों का प्रयोग नहीं है, तथापि उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, उल्लेख, अर्थान्तरन्यास, श्लेष, विरोधाभास आदि अलंकार प्राप्य हैं। छन्दोयोजना की दृष्टि से देखने पर ज्ञात होता है कि कवि ने लम्बे छन्दों के प्रयोग में भी विशेष दक्षता प्राप्त की थी। अनुष्टुप् के पश्चात् क्रमशः वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा और शिखरिणी के प्रयोग मिलते हैं।

वेणीसंहार में ओज गुण के साथ प्रसाद गुण मणि कांचन-संयोग प्रस्तुत करता है। कर्ण की प्रसाद गुणयुक्त उक्ति में कितना स्वाभिमान और तेजस्विता है।जन्म भाग्याधीन है और पुरुषार्थ मेरे अधीन-

सूतो वा सूतपुत्रो वा यो वा को वा भवाम्यहम्।
दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम्।।

आलोचकों ने यद्यपि वेणीसंहार की न्यूनताओं का उल्लेख किया है, परन्तु उसके गुणों को ध्यान में रखने पर ये दोष नगण्य से प्रतीत होते हैं। वेणीसंहार वीर रस के वर्णन में अनुपम है। उसकी भाषा में ओज है, शक्ति है और संवेदनात्मकता की क्षमता है। वेणीसंहार ही वह नाटक है जो निर्वीर्य में भी शक्ति संचार करने की क्षमता रखता है। इसमें कहीं रामायण-महाभारत के तुल्य प्रसाद और माधुर्य है तो अन्यत्र ओज की सजीव उपस्थिति। वीर और करुण रसों का इतना सुन्दर समन्वय किसी नाटक में प्राप्त नहीं है। भीम जैसा नायक दर्शकों तक को आतंकित करने में समर्थ है। नाटक में काव्यात्मकता दोष होने पर भी यह सहृदयों के हृदय को इतना आप्लावित कर देता है कि वे उसके दोषों को भूलकर गुणों पर मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं। यही कारण है कि नाट्यशास्त्रियों और काव्यशास्त्रियों को वेणीसंहार अत्यन्त रुचिकर प्रतीत हुआ है। नाटकीय तत्त्वों के वर्णन में तो यह अद्वितीय है। कवि को पूरी महाभारत की कथा पार करनी थी, अतः कुछ प्रसंग अवश्य विस्तृत हो गए हैं, परन्तु वे प्रसंग कथा-संयोजन के लिए अत्यन्त अनिवार्य हैं। अंक २, ३, ४, ५ हटाने योग्य या अनावश्यक कहने पर नाटक की आत्मा की ही हत्या हो जाएगी। इसका चरित्र चित्रण अत्यन्त सुन्दर और प्रभावोत्पादक है।

संवादों और वर्णनों में सजीवता और यथार्थता है। इसमें अर्थानुकूल शब्द-विन्यास पाश्चात्त्य विद्वानों के द्वारा भी प्रशंसनीय रहा है।

इस प्रकार निःसन्देह यह कहा जा सकता है कि वेणीसंहार संस्कृत-नाटकों में प्रथम श्रेणी के नाटकों में एक है। भट्टनारायण को यह श्रेय प्राप्त है कि वह वीर रस-प्रधान नाटक में भी शृङ्गार रस-प्रधान नाटक के तुल्य रोचकता और आकर्षण उत्पन्न कर सके। अतः भट्टनारायण को सफल नाटककार और वेणीसंहार को उत्तम नाटक कहा जा सकता है।